International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 1442-1445

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 1442-1445
www.allresearchjournal.com
Received: 20-05-2017
Accepted: 23-06-2017

कमल कान्त शर्मा
नारेडा कला, बहरोड़, अलवर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
कमल कान्त शर्मा
नारेडा कला, बहरोड़, अलवर, राजस्थान, भारत

वर्तमान समय में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता

कमल कान्त शर्मा

सारांशः
बौद्ध धर्म भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का वह मूल्यवान बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक तथा मानवतावादी जीवन पक्ष है जो सम्पूर्ण मानवता को अतीत की भाँति आज भी अर्न्तदृष्टि प्रदान करता है। बौद्ध धर्म अत्यंत निर्मल, निष्कलंक, निश्छल, सार्वजनीत, सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सनातन, वैज्ञानिक एवं आशुफलदायी है, इसमें प्रज्ञा, शील, समाधि, सदाचार व ध्यानादि के माध्यम से शरीर व चित्त के पारस्परिक प्रभाव क्षेत्र का यथाभूत दर्शन करते हुए मन के अंदर की गहराईयों में निरीक्षण करते हुए प्रपंच मय अनित्यबोधिनी प्रज्ञा को जागृत किया जाता है, ताकि मन एवं शरीर को विकार मुक्त किया जा सके। अतः बौद्ध धर्म व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति के साथ–साथ उसे शुद्ध चित्त, विकार रहित शरीर व स्वास्थ्यप्रद वातावरण युक्त जीवन पद्धति प्रदान करता है। अपने अतीत के गौरव को याद रखकर चलना ही भविष्य का निर्माण है। दूसरे को हानि न पहुंचाना ही बुद्ध का दर्शन है। 'अत्त दीपो भव' की कल्पना को स्वीकार करना आज की महती आवश्यकता है। आज के इस वैज्ञानिक एवं भूमंडलीकरण के रूप में जब पूरी दुनिया आतंकवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, एवं वर्चश्व के संघर्षरत है तो भगवान बुद्ध की करुणा सहिष्णुता एवं विश्व शांति का संदेश संपूर्ण विश्व का मार्ग दर्शन करेगा।

संकेताक्षरः बौद्ध धर्म, भगवान बुद्ध, बौद्ध धर्म में शांति।

प्रस्तावनाः
बौद्ध धर्म एक शांतिवादी, मानवतावादी और विश्वबंधुत्व की भावना रखने वाला दर्शन है। यदि भगवान बुद्ध के मानवीय विचारों को समाज के हित में प्रयोग में लाया जाए तो मानव समाज के सभी कष्ट बड़ी आसानी से दूर किये जा सकते हैं।[1] बौद्ध धर्म ऐसे नियमों का संग्रह है जो हमें यथार्थ के सही स्वरूप को पहचान कर अपनी संपूर्ण मानवीय क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करता है। बौद्ध दर्शन में परस्पर निर्भरता, सापेक्षता और कारण–कार्य संबंध जैसे विषयों के बारे में चर्चा की जाती है। इसमें समुच्चय सिद्धांत और तर्क–वितर्क पर आधारित तर्कशास्त्र की एक विस्तृत व्यवस्था है जो हमें अपने चित्त की दोषपूर्ण कल्पनाओं को समझने में सहायता करती है। बौद्ध नीतिशास्त्र स्वयं अपने लिए और दूसरों के लिए हितकारी और हानिकारक बातों के बीच भेद करने की योग्यता पर आधारित है। बौद्ध धर्म मूलतः अनीश्वरवादी और अनात्मवादी है। अर्थात इसमें ईश्वर और आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है। लेकिन पुनर्जन्म को मान्यता दी गई है। बुद्ध ने सांसारिक दुखों के संबंध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया और मध्यम मार्ग बता कर रास्ते दिखाए।

आज विश्व में हिंसा और सामाजिक भेदभाव बढ़ रहा है। मनुष्य विचारों से हिंसात्मक होता जा रहा है। आतंकवाद या फिर दो देशों के बीच युद्ध जैसे हालात हैं। ऐसी विकट परिस्थिति में बौद्ध दर्शन कहीं ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है। व्यक्ति के विनाशकारी विचारों को बदलना और उन पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है। लगभग ढाई हजार साल पहले बुद्ध ने मानवीय प्रवृतियों का विश्लेषण करते हुए कहा था कि मनुष्य का मन ही सारे कर्मों का नियंता है। इसलिए मानव की गलत प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने के लिए उसके मन में सदविचारों का प्रवाह कर उसे सदमार्ग पर ले जाना जरूरी है। उन्होंने यह सदमार्ग बौद्ध धर्म के रूप में दिया था। अतः आज मानव–मात्र की कुप्रवृत्तियों, जैसे– हिंसा, शत्रुता, द्वेष, लोभ आदि से मुक्ति पाने के लिए बौद्ध दर्शन को समझने जरूरत है।

महात्मा बुद्ध ने अपने धर्म में सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक और राजनीतिक स्वतंत्रता व समानता की शिक्षा दी है। बुद्ध ने सांसारिक दुखों के संबंध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया था। ये आर्य सत्य बौद्ध धर्म का मूल आधार हैं। इसके साथ ही सांसारिक दुखों से मुक्ति के लिए बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग पर चलने की बात कही। आष्टांगिक मार्ग के साधन हैं– सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मांत, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि।

मध्यम मार्ग का उपदेश देते हुए बुद्ध ने कहा कि मनुष्य को सभी प्रकार के आकर्षण और कायाक्लेश से बचना चाहिए। अर्थात, न तो अत्यधिक इच्छाएं करनी चाहिए, न ही अत्यधिक तप (दमन) करना चाहिए, बल्कि इनके बीच का मार्ग अपना कर दुख–निरोध का प्रयास करना चाहिए। सम्यक का अर्थ दो अतियों के बीच मध्यम स्थिति है। दोनों तरह की अति बुरी हैं। बीच का रास्ता ही ठीक है। बुद्ध का कहना है जो व्यक्ति अपनी जीवन–परिदृष्टि ठीक रखेगा, जो सही संकल्प या इरादा रखेगा, जिसकी वाणी अच्छी होगी, कर्म अच्छे होंगे, जिन्होंने जीविका के लिए बेहतर अर्थात भ्रष्टाचार–मुक्त साधन चुने होंगे, जो अपनी इंद्रियों को नियंत्रण में रखने के लिए व्यायाम करते रहेंगे, वे दुखमुक्त होंगे।

सम्यक वाणी, सम्यक कर्म और सम्यक जीविका 'शील' है और सम्यक प्रयत्न, सम्यक स्मृति व सम्यक समाधि को 'समाधि' कहते हैं। विभिन्न बौद्ध ग्रंथों में इसकी विवेचना की गई है। जैसे शील पांच हैं, जिन्हे पंचशील कहा जाता है। कोई व्यक्ति संघ में शामिल होने के पूर्व इन पंचशील की शपथ लेता है। ये पांच शील हैं– अहिंसा, चोरी न करना, झूठ न बोलना, काम संबंधी व्यभिचार न करना और नशा नहीं करना। ये पांच शील आम जनों के लिए है। लेकिन भिक्षुओं के लिए पांच और शील हैं। उनके लिए दिन में कई दफा भोजन, आभूषण या कीमती चीजें धारण करना, स्वर्ण–रजत छूना, संगीत, और गद्देदार बिस्तर तक की मनाही है। इसी तरह सूक्ष्म से सूक्ष्मतम चीजों पर बौद्धों ने पर्याप्त विमर्श किया है। यह दर्शन पूरी तरह से यथार्थ में जीने की शिक्षा देता है। दलाई लामा ने कहा है– 'हम आस्तिक हों या अनीश्वरवादी, ईश्वर को मानते हों या कर्म में विश्वास रखते हों, हममें से प्रत्येक नैतिक नीतिशास्त्र का अनुशीलन कर सकता है।'

आज पूरी दुनिया हिंसा, धर्मिक उन्माद, नस्लीय टकराव जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रही है। मानव अस्तित्व के लिए बड़े और गंभीर खतरे खड़े हो गए हैं। इंसान ने जहां विज्ञान, तकनीकी और यांत्रिकी में विकास और उसके उपयोग से अपार समृद्धि हासिल कर ली है, तो दूसरी ओर स्वार्थ, लोभ, हिंसा आदि भावनाओं के वशीभूत होकर वह आपसी कलह, लूट–खसोट, अतिक्रमण जैसे विनाशकारी मार्ग को भी अपना रहा है। अतः आज दुनिया में भौतिक संपदा के साथ–साथ मानव अस्तित्व को भी बचाना आवश्यक हो गया है। इसलिए आदमी के विनाशकारी विचारों को बदलना और उस पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है। बुद्ध ने मानवीय प्रवृतियों का विश्लेषण करते हुए कहा था कि मनुष्य का मन ही सभी कर्मों का नियंता है। अतः मानव की गलत प्रवृतियों को नियंत्रित करने के लिए उसके मन में सद् विचारों का प्रवाह कर उसे सदमार्ग पर ले जाना आवश्यक है। उन्होंने यह सदमार्ग बौद्ध धम्म के रूप में दिया था।

आपसी शत्रुता के बारे में बुद्ध ने कहा था कि वैर से वैर शांत नहीं होता। यह सूत्र हमेशा से सार्थक रहा है। डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर ने भी कहा था कि हिंसा द्वारा प्राप्त की गई जीत स्थायी नहीं होती, क्योंकि उसे प्रतिहिंसा द्वारा हमेशा पलटे जाने का डर रहता है। अतः वैर को जन्म देने वाले कारकों को बुद्ध ने पहचान कर उनको दूर करने का मार्ग बहुत पहले ही प्रशस्त कर दिया था। उन्होंने मानवमात्र के दुखों को कम करने के लिए पंचशील और अष्टांगिक मार्ग के नैतिक व कल्याणकारी जीवन दर्शन का प्रतिपादन किया था।[2]

आज भारत सहित विश्व में जो धार्मिक कट्टरवाद व टकराव दिखाई दे रहा है, वह सबके लिए बड़ी चिंता और चुनौती का विषय है। भारत में सांप्रदायिक दंगों और जातीय–जनसंहारों में जितने निर्दोष लोगों की जानें गई हैं, वे भारत द्वारा अब तक लड़ी गई सभी लड़ाइयों में मारे गए सैनिकों से कहीं अधिक हैं। अतः अगर भारत में धार्मिक–स्वतंत्रता और धर्म–निरपेक्षता के संवैधानिक अधिकार को बचाना है तो बौद्ध धर्म के धार्मिक सहिष्णुता, करुणा और मैत्री के सिद्धांतों को अपनाना जरूरी है। दुनिया में धार्मिक टकरावों का एक कारण इन धर्मों को विज्ञान द्वारा दी जा रही चुनौती भी है। ईश्वरवादी धर्मों के अनुयायियों की संख्या कम होती जा रही है क्योंकि वे विज्ञान की तर्क और परीक्षण वाली कसौटी पर खरे नहीं उतर पा रहे हैं।

अतः वे अपने को बचाए रखने के लिए तरह–तरह के प्रलोभनों द्वारा, चमत्कारों का प्रचार एवं अन्य हथकंडों का इस्तेमाल करके अपने अनुयायियों को बांध कर रखना चाहते हैं। उनमें अपने धर्म की अवैज्ञानिक और अंध–विश्वासी धारणाओं को बदलने की स्वतंत्रता एवं इच्छाशक्ति का नितांत अभाव है। इसके विपरीत बौद्ध धर्म विज्ञानवादी और परिवर्तनशील होने के कारण विज्ञान के साथ चलने और जरूरत पड़ने पर अपने को बदलने में सक्षम है। इन्हीं गुणों के कारण आंबेडकर ने भविष्यवाणी की थी कि यदि भविष्य की दुनिया को धर्म की जरूरत होगी तो इसको केवल बौद्ध धर्म ही पूरा कर सकता है।[3]

बौद्ध धर्म के चार सत्य है– दुख, दुख के कारण, दुख निरोध का मार्ग, दुख निरोध संभव है। दुख का कारण इच्छाएं हैं और प्रत्येक इच्छा की तृप्ति संभव नहीं है। इसलिए इच्छाओं पर लगाम होना चाहिए। जब–जब इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, तो वह दुख का कारण बनती है।[4]

आज व्यक्ति और समाज दोनों ही भौतिक साधन सम्पन्न है, फिर भी मन अशान्त है। कारण स्पष्ट है कि दिन प्रतिदिन परस्पर पनपते अविश्वास की भावना, जातीय वैमनस्य, साम्प्रदायिक हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता, अपराधीकरण, महिलाओं का अपमान एवं शोषण, मानवाधिकार हनन, भ्रूणहत्या, कानून का सरेआम उल्लंघन, राजनैतिक अपराधीकरण, निरंतर बढ़ता जनसंख्या का घनत्व, पर्यावरण प्रदूषण, भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद इत्यादि समस्याओं से मानव–जगत आक्रान्त है, पीड़ित है और भयभीत भी। ऐसी ही विषम परिस्थितियाँ आज से अनेक वर्ष पूर्व भगवान् बुद्ध के समय में भी थीं। नाना प्रकार के दुःखों से संतप्त, विविध व्याधियों से पीड़ित एवं अशान्त मानव को सुखी बनाना उनका कल्याण करना ही बौद्ध धर्म का प्रमुख लक्ष्य है। बुद्ध ने भिक्षुओं को सम्बोधित करते हुए स्पष्ट निर्देश दिया है कि भिक्षुओं लोगों के हित–सुख के लिए लोक पर दया करने के लिए, देव–मनुष्यों के कल्याण के लिए विचरण करे।[5] इस प्रकार भगवान् बुद्ध की समस्त देशना मानव समाज एवं राष्ट्र के कल्याण एवं विश्वबन्धुत्व की भावना से ओत–प्रोत है।[6]

भगवान बुद्ध का पंचशील और निर्वाण का मार्ग

भारतीय संस्कृति को विश्वव्यापी रूप देने व विश्वगुरु के स्थान पर विराजित कराने मे सनातन धर्म की एक शाखा के रूप मे उपजे बौद्ध धर्म का आविर्भाव एक महत्वपूर्ण घटना रही है। सनातन में या हिंदू धर्म में विष्णु के नवे अवतार के रूप में भगवान बुद्ध को गिना जाता है। लगभग 2600 वर्ष पूर्व सनातन से उपजा तथागत बुद्ध प्रवर्तित बोद्ध धर्म बाद में वैश्विक सांस्कृतिक व राजनैतिक परिवर्तनों को जन्म देने का एक बड़ा कारण सिद्ध हुआ। बौद्ध धर्म को विश्व का तीसरा सबसे बड़ा वैश्विक धर्म बनाने में बौद्ध तत्व बड़े ही महत्वपूर्ण रहे हैं। इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण वह बात रही जिसमें भगवान बुद्ध ने कहा था कि हम सब स्वतंत्रता की कामना करते हैं, पर जो चीज मनुष्यों को अलग बनाती है वह है बुद्धि। पर स्वतंत्र मनुष्यों के रूप में हम अपनी अद्वितीय बुद्धि के उपयोग से स्वयं को और अपने विश्व को समझने का प्रयास कर सकते हैं।

भगवान बुद्ध ने स्पष्ट कर दिया था कि उनके अनुयायी स्वयं उनकी बातों को सुन कर जस का तस न मान लें बल्कि उनका परीक्षण करें, जांच करें जैसे एक सुनार सोने की गुणवत्ता की करता है। उन्होंने कहा था कि यदि हमें अपने विवेक और रचनात्मकता का उपयोग करने से रोका जाता है तो हम मनुष्य होने का एक आधारभूत गुण खोते हैं। गौतम बुद्ध ने विश्व को पंचशील और निर्वाण का मार्ग दिखाया, यह मार्ग पहले की अपेक्षा

आज ज्यादा व्यावहारिक, सार्वलौकिक एवं सर्वाधिक उपयुक्त है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बोधगया में एक सभा को संबोधित करते हुये कहा था– कई भारतीय विद्वानों ने हिन्दुत्व पर बुद्ध के प्रभाव का विश्लेषण किया है। यहां तक कि जिस तरह आदि शंकर बुद्ध से प्रभावित हुए थे, उनकी आलोचना की गई थी और शंकर को "प्रच्छन्न बुद्ध" अर्थात् शंकर के भेष में बुद्ध भी कहा गया था। सर्वश्रेष्ठ हिंदू दार्शनिक आदि शंकर बुद्ध से इतने प्रभावित थे। आमजन के लिए बुद्ध इतने श्रद्धेय थे कि जयदेव ने अपने 'गीत गोविंद' में उनकी महाविष्णु के रूप में प्रशंसा की जो अहिंसा का पाठ पढ़ाने के लिए भगवान के रूप में अवतरित हुए। इसलिए बुद्ध के आगमन के पश्चात हिंदू बौद्ध के रूप में व बौद्ध हिंदू के रूप में समाहित हो गये। आज वे एक–दूसरे में पूरी तरह से घुलमिल गए हैं।

भारत की सांस्कृतिक सीमाओं के विस्तार में व बिना शस्त्र ही विश्वविजयी होने मे प्रमुख योगदान दिया है तथागत गौतम बुद्ध द्वारा प्रचलित बौद्ध धर्म ने। भगवान बुद्ध ने ईसवीं पूर्व 563 से ईसवीं पूर्व 483 तक अपना यशस्वी जीवन जिया और बौद्ध धर्म को स्थापित किया। आज विश्व में बौद्धों की संख्या लगभग 200 करोड़ हो गई है। विश्व के सभी महाद्वीपों मे प्रचलित होकर यह एक विश्वधर्म के रूप में स्थापित हो गया है। माना जाता है कि अकेले चीन में ही 100 करोड़ से अधिक बौद्ध हैं जो चीन की जनसंख्या का 80 प्रतिशत से अधिक है। आज वहां सभी बौद्ध ग्रन्थों का चीनी भाषांतर हो चुका है। दक्षिण पूर्वी एशिया में तो बौद्ध धर्म एक प्रमुख धर्म बन चुका है। थाईलैंड एक घोषित बौद्ध राष्ट्र है, यहां बौद्ध विहारों, लंबे सुनहरे स्तूप, बौद्ध वास्तुकला प्रमुख रूप से दिखती है।

भारत के लिये भगवान बुद्ध के सांस्कृतिक महत्व को स्वामी विवेकानंद द्वारा तथागत बुद्ध के लिये कहे गए इन शब्दों से समझा जा सकता है– जब बुद्ध का जन्म हुआ, उस समय भारत को एक महान आध्यात्मिक गुरु की परम आवश्यकता थी। भगवान बुद्ध कभी भी न वेद, न जाति, न पंडित और न ही परम्परा, कभी किसी के आगे नहीं झुके। उन्होंने निर्भय होकर तर्कसंगत रूप से अपना जीवन बिताया। निर्भय होकर सच्चाई की खोज की और विश्व में सभी के लिए अगाध प्रेम रखने वाले ऐसे महामानव को विश्व ने पहले कभी नहीं देखा। बुद्ध किसी भी अन्य धर्मगुरु से अधिक साहसी और अनुशासित थे। बुद्ध पहले मानव थे जिन्होंने इस दुनिया को आदर्शवाद का एक पूरा तंत्र दिया। वे भलाई के लिए भले और प्रीत के लिए प्रीतिकर थे। बुद्ध समानता के बहुत बड़े समर्थक थे। प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्मिकता प्राप्त करने का समान अधिकार हैदृ यह उनकी शिक्षा है। मैं व्यक्तिगत रूप से भारत को बौद्ध–भारत कहूंगा क्योंकि इस देश ने धार्मिक विद्वानों से बुद्ध द्वारा दिये गए सभी मूल्यों और शिक्षाओं को आत्मसात कर उन्हें यहाँ के साहित्य में दर्शाया।

हमारे भारत से उद्भव हुआ बौद्ध धर्म आज चीन, जापान, वियतनाम, थाईलैण्ड, म्यान्मार, भूटान, श्रीलंका, कम्बोडिया, मंगोलिया, तिब्बत, लाओस, हांगकांग, ताइवान, मकाउ, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, रूस, तुर्किस्तान, तजाकिस्तान एवं उत्तर कोरिया समेत कुल 18 देशों का प्रमुख धर्म है। नेपाल, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, रूस, ब्रूनेई, मलेशिया आदि देशों में भी करोड़ों बौद्ध निवासरत हैं।[7]

कोरोना महामारी ने 'युद्ध नहीं, बुद्ध' की चेतना जगाया

कोरोना महामारी के दौर में बुद्धं शरणं गच्छामि... की प्रार्थना को चरितार्थ करते हुए पूरा विश्व एक बार फिर 'भैषज्यगुरु', 'मेडिसिन बुद्धा' की शरण में है। दुनिया में एक बार फिर 'युद्ध नहीं, बुद्ध' की चेतना जाग्रत हुई है। बुद्ध मानव के लिए हमेशा प्रासंगिक रहे हैं, फिर भी आज उनकी प्रासंगिकता की तीव्रता का अनुभव विश्वव्यापी है। रोग, बुढ़ापा और मृत्यु के मानवीय कष्ट से दुखी होकर 2,600 साल पहले राजकुमार सिद्धार्थ गौतम जब राजमहल से घटाटोप रात में मनुष्य के जरा–मरण–रोग से मुक्ति का उपाय ढूंढ़ने निकल पड़े, तब वह बुद्ध नहीं थे। कठिन तपस्या और एकांतवास के बाद जब उनमें बोधगया (बिहार) में पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न स्थिति में ज्ञान की ज्योति का 'शक्तिपात' हुआ, वह राजमहल का त्याग करने वाले राजकुमार से 'बुद्ध' हो गए।

बुद्धत्व प्राप्ति के बाद बुद्ध ने मानवमात्र के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित करते हुए 12 प्रतिज्ञाएं कीं। ये सभी प्रतिज्ञाएं मानव कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित करने की प्रतिज्ञाएं थीं। इनमें बुद्ध की छठीं तथा सातवीं प्रतिज्ञाएं आज उन्हें और भी प्रासंगिक सिद्ध करती हैं। बुद्ध ने छठी प्रतिज्ञा की– बीमार, अशक्त, विकलांग सभी पूर्ण स्वस्थ हों और जो मेरी शरण में आएंगे, वे रोग–शोक से मुक्त होंगे। सातवीं प्रतिज्ञा में उन्होंने कहा, मैं समस्त रोगियों, असहाय लोगों और गरीब लोगों को हर प्रकार के कष्ट और पीड़ा से मुक्ति दूंगा। बौद्ध महायान परंपरा में भगवान बुद्ध के आठ अवतारों में सातवां अवतार 'भैषज्यगुरु' का अवतार है। तिब्बत में बुद्ध के मंजुश्री, अमिताभ, पद्मसंभव आदि रूपों की मान्यता के साथ 'मेडिसिन बुद्ध' भी पूजित हैं। बौद्ध परंपरा के मूल ग्रंथ त्रिपिटक में बुद्ध को 'शल्यकत्तो अनुत्तरो' अर्थात शल्यक्रिया में निपुण, उत्कृष्ट, अद्वितीय सर्जन की मान्यता है। पृथ्वी पर उनका प्रादुर्भाव ही मानवमात्र के कल्याण और दुख निवारण के लिए हुआ। उन्होंने धर्म के आचरण को कष्ट, पाप एवं पीड़ा के निवारण का मार्ग बताया। बौद्ध ग्रंथों में भगवान बुद्ध के हर रूप में उनकी रोगशमन शक्ति की महिमा का विशेष उल्लेख है। गिरिमानंद सुत्त में वर्णित एक चर्चित प्रसंग के अनुसार, राजगीर में बुद्ध के एक भिक्षु गंभीर रूप से बीमार हो गए। दूसरे भिक्षु आनंद ने भगवान बुद्ध को जब इस बारे में बताया, तो उन्होंने बीमार भिक्षु के लक्षण पूछे, फिर रोग के लक्षणों के आधार पर निदान किया तथा उपचार बताया कि साफ–सफाई के साथ रहकर एक सप्ताह बैठकर साधना करना है। ऐसा करने पर सातवें दिन ही बीमार भिक्षु पूर्ण स्वस्थ होकर बुद्ध के चरणों में पहुंचे।

महायान–बौद्ध परंपरा के अनुयायी जापान, चीन, तिब्बत, मंगोलिया, वियतनाम आदि देशों के बौद्धों का पारंपरिक विश्वास है कि केवल बुद्ध की मूर्ति के स्पर्श या उनके नामोच्चारण से ही अनेक रोगों का उपचार हो जाता है। कुछ जटिल रोगों के उपचार के लिए बौद्ध धर्म की 'भैषज्यगुरु' परंपरा में अनेक कठिन पूजा–उपचार पद्धतियां हैं। महायान संप्रदाय में अनेक मुद्राओं में भैषज्यगुरु की प्रतिमाएं हैं। जापान के नारा शहर में आठवीं सदी के विश्वप्रसिद्ध कोफूकूजी मंदिर में अत्यंत सुंदर बुद्ध प्रतिमा के एक हाथ में औषधिपात्र तथा दूसरा हाथ भूमि स्पर्श मुद्रा में है, जिसकी अनेक धार्मिक, आध्यात्मिक एवं तात्विक विवेचनाएं बौद्ध साहित्य में मिलती हैं। इसी मंदिर में आठवीं सदी में जापान के बीमार सम्राट के स्वास्थ्य लाभ के लिए पूजन, उपचार किया गया। वे पूर्ण स्वस्थ हो गए।[8]

यह स्पष्ट है कि शताब्दियों पूर्व महात्मा बुद्ध में जिन सिद्धान्तों एवं आदर्शों का प्रतिपादन किया वे आज के वैज्ञानिक युग में भी अपनी मान्यता बनाये हुए हैं तथा विश्व में उन्हें कार्यान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं। भारत में अपने राजचिन्ह के रूप में बौद्ध प्रतीक को ही ग्रहण किया है तथा वह शान्ति एवं सह–अस्तित्व के सिद्धान्तों का पोषक बना हुआ है। पंचशील का सिद्धान्त बौद्ध धर्म की ही देन है। आधुनिक संघर्षशील युग में यदि हम बुद्ध के सिद्धान्तों का अनुसरण करें तो निःसंदेह शान्ति और सद्भाव स्थापित हो सकती है।

निष्कर्ष

बुद्ध के पंचशील सिद्धांत आज समाज और देश–दुनिया के लिए प्रासंगिक हैं। वर्तमान परिदृश्य में भगवान बुद्ध के नैतिकता

सिद्धान्तों से सामाजिक परिवर्तन कर संघर्ष निवारण किया जा सकता है। शांति और सद्भाव का मार्ग दुर्गम हो सकता है, असाध्य नहीं हैं। इस प्रकार 21वीं शताब्दी के भविष्य के लिये संघर्ष निवारण हेतु बौद्ध दर्शन के वैकल्पिक तंत्र के प्रयोग व विकास की आवश्यकता है। बौद्ध दर्शन में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मुद्दों से संबंधित भगवान बुद्ध के विचारों और नजरिया वर्तमान समय में अब अधिक प्रासंगिक है। भगवान बुद्ध के उपदेश सार्वभौमिक व सर्वकालिक है एवं वह सभी के लिए हितकारी है। विश्व स्तर पर पनप रहे भ्रष्टाचार, आतंकवाद, ईर्ष्या–द्वेष आदि को समाप्त कर एक स्वरूप, सम्पन्न लोक मंगलकारी समाज बनाने के उद्देश्य से बुद्ध के उपदेश आज भी सक्षम व प्रासंगिक हैं। आज का मानव वर्तमान परिवेश में रक्षक की जगह भक्षक न बन जाये, इसके लिए हमें बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों को अपनाना होगा। जिससे व्यक्ति के आचरण, बुद्धि व विचार में परिवर्तन हो सके, क्योंकि समाज में एकता एवं समानता, मैत्री, न्याय एवं विश्व बन्धुत्व के माध्यम से ही ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना को साकार हो सकेगा।

संदर्भ

1. धम्म सेनानायक, अंक 6 वर्ष 1, जून 2001, पृ. 6.
2. पाण्डेय, अजय कुमार, बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. 76.
3. राज, मोनिका आलेख ''बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता'', जनसत्ता, 26 मई, 2021.
4. वर्तमान परिवेश में बौद्ध धर्म अधिक प्रासंगिक, जागरण, 18 दिसम्बर, 2013.
5. महावग्ग, पृ. 23.
6. जैन, जिनेन्द्र, जैनविद्या एवं बौद्ध अध्ययन के आयाम, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004, पृ. 363.
7. गुगनानी, प्रवीण आलेख ''भगवान गौतम बुद्ध ने विश्व को पंचशील और निर्वाण का मार्ग दिखाया'', प्रभा साक्षी समाचार पत्र, 7 मई, 2020.
8. पाठक, राममोहन आलेख ''महामारी के दौर में एक बार फिर 'युद्ध नहीं, बुद्ध' की चेतना जाग्रत'', अमर उजाला, 26 मई, 2021.